अंक: 1 | 2021

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

जाइका वानिकी परियोजना
वर्ष 2020 - 2021 की मुख्य गतिविधियां

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं
आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित)

Follow us on:
/HPJICAPIHPFEML
JICA HP Forestry Project

परियोजना कार्यालय, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-171005 (हि.प्र.)
दूरभाष : 0177-2830217 ई-मेल : cpdjica2018hpfd@gmail.com

हिमाचल प्रदेश में परियोजना के अर्न्तगत वन मण्डल, वन परिक्षेत्र व वन संरक्षित क्षेत्र का मानचित्र

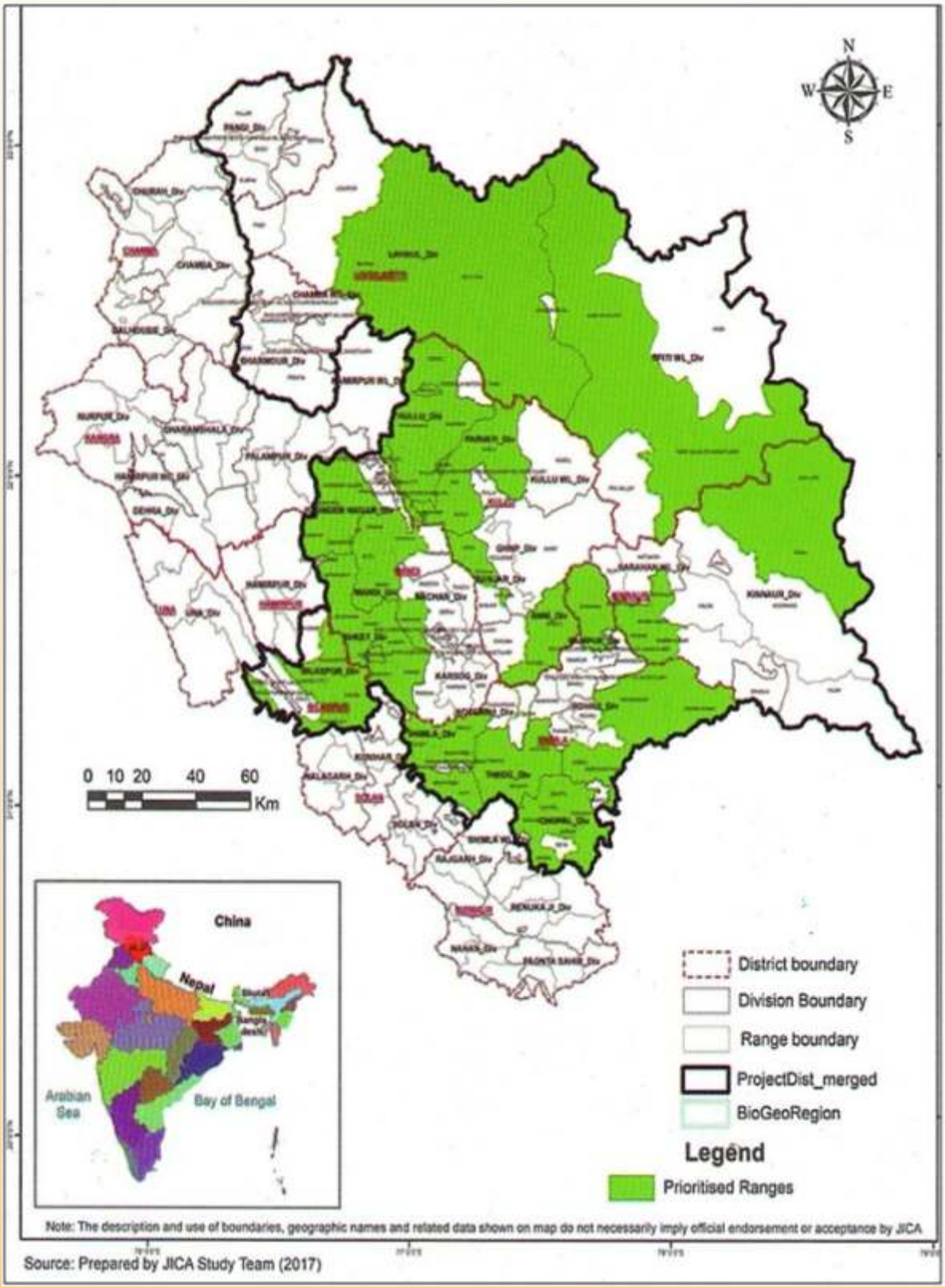

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

जाइका वानिकी परियोजना
वर्ष 2020 - 2021 की मुख्य गतिविधियां

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित)

परियोजना कार्यालय, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-171005 (हि.प्र.)

दूरभाष : 0177-2830217 ई-मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

Follow us on:

/HPJICAPIHPFEML

JICA HP Forestry Project

जय राम ठाकुर
मुख्य मंत्री
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि जाइका वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना द्वारा 'वर्ष 2020–2021 की प्रमुख गतिविधियों' पर एक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस परियोजना का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश में हरित आवरण को बढ़ाना और लोगों की आजीविका का संवर्धन करना जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से वन संसाधनों पर निर्भर हैं। यह संतोष की बात है कि यह परियोजना प्रारभिंक तौर पर प्रदेश के छः जिलों (मण्डी, कुल्लू, बिलासपुर, शिमला, किन्नौर और लाहौल–स्पीति) में सफलतापूर्वक चलाई जा रही है।

मेरा मानना है कि इस प्रकाशन से जहां एक ओर परियोजना की प्रगति के दस्तावेजीकरण के लिए एक उपयुक्त मंच प्राप्त होगा, वहीं दूसरी ओर परियोजना के कार्यान्वयन के दौरान स्थानीय समुदायों और अन्य सभी हितधारकों को उपयुक्त जानकारी सरलतापूर्वक प्राप्त हो पाएगी, जो परियोजना में लोगों की सक्रिय भागेदारी को सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं आशा करता हूं कि पत्रिका परियोजना से संबंधित गतिविधियों के प्रचार–प्रसार को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाएगी तथा लोग मिलकर इस परियोजना को सफलतापूर्वक लागू करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

पत्रिका के पहले अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(जय राम ठाकुर)

राकेश पठानिया
वन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171002

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्त पोषित) की "वर्ष 2020–2021 की मुख्य गतिविधियों" की पत्रिका का पहला प्रकाशन जारी किया जा रहा है।

परियोजना क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के छह जिलों (मण्डी, कुल्लू, बिलासपुर, शिमला, किन्नौर और लाहौल–स्पीति) में पड़ने वाले 16 क्षेत्रीय वन मण्डलों और 2 वन्यप्राणी मण्डलों के 56 क्षेत्रीय परिक्षेत्र और 5 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों में फैला हुआ है। इतने वृहद क्षेत्र में की जा रही परियोजना संबन्धि मुख्य गतिविधियों की जानकारी वार्षिक आधार पर हितधारकों के साथ साझा करने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

परियोजना से जहां एक ओर जनसहयोग से अपघटित वनों का सुधार किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर वनों पर आश्रित लोगों की आजीविका को बेहतर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। परियोजना की विशेष बात यह भी है कि पहली बार हिमालय की लुप्तप्राय हो रही जड़ी–बूटियों के संवर्धन पर बल दिया जा रहा है और स्थानीय समुदायों को इन जड़ी–बूटियों की खेती के द्वारा आय का एक अतिरिक्त साधन भी उपलब्ध करवाया जा रहा है।

मैं परियोजना अधिकारियों को इस पत्रिका के पहले संस्करण के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि इस प्रकाशन के द्वारा परियोजना गतिविधियों के बेहतर संचालन में मदद मिलेगी।

(राकेश पठानिया)

निशा सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002

प्रस्तावना

मैं, हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्त पोषित) की प्रथम ''वर्ष 2020–2021 की मुख्य गतिविधियों'' की पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई देती हूं। मेरा मानना है कि यह पत्रिका परियोजना और स्थानीय समुदाय के सदस्यों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करेगी। इस परियोजना से स्थानीय समुदाय सबसे अधिक लाभान्वित होगा।

यह हमारे राज्य में जाइका की पहली वित्त पोषित वानिकी परियोजना है, जो विशेष रूप से अंतिम वन छोर और आश्रित समुदायों के पर्यावरणीय और सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान करते हुए वन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के संवर्द्धन और प्रबंधन पर केंद्रित है। यह परियोजना अपने प्रारंभिक वर्षों में स्थानीय आबादी, अनुसंधान आधारित संगठनों और अन्य सरकारी विभागों के बीच महत्वपूर्ण भागीदारी को सक्रिय करने और इसकी सभी गतिविधियों में रुचि रखने में सक्षम रही है।

मेरा मानना है कि हमारे लोगों के साथ व्यक्तिगत संचार व संपर्क प्रयासों की स्थायी सफलता सुनिश्चित करने में एक लंबा रास्ता तय करते हैं। यही इस पत्रिका से भी परिलक्षित होता है। परियोजना के अंतर्गत वर्ष 2020–21 में की गई गतिविधियों के प्रदर्शन से हमारे स्थानीय लोगों के साथ लंबे समय तक चलने वाले सहयोग को दर्शाते हैं, जो परियोजना के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। मैं, इस पत्रिका के सफल प्रकाशन और इसके आगामी संस्करणों के लिए परियोजना अधिकारियों को अपनी शुभकामनाएं देती हूं। मुझे आशा है कि इस जीवंत टीम के ठोस प्रयास उन्हें हिमाचल प्रदेश के वन सुदूर क्षेत्रों और स्थानीय समुदायों के एक व्यापक खंड के सतत् पर्यावरण और सामाजिक विकास के परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे।

(निशा सिंह)

विषय सूची

- परियोजना के अधीन आने वाले जिलों, वन मण्डलों तथा वन परिक्षेत्रों की सूची
- हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना
- मुख्य विशेषताएं
- मुख्य गतिविधियां
- माननीय मुख्यमंत्री द्वारा जाइका वानिकी परियोजना की वेबसाइट का शुभारंभ
- माननीय वन मन्त्री श्री राकेश पठानिया ने किया परियोजना मुख्यालय का दौरा: एक रिपोर्ट
- सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन
- जैव विविधता संरक्षण
- आजीविका सुधार घटक
- संस्थागत क्षमता को मजबूत बनाना
- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- मीडिया में परियोजना गतिविधियां

परियोजना के अधीन आने वाले जिलों, वन मण्डलों तथा वन परिक्षेत्रों की सूची

जिला	वन मण्डल	वनपरिक्षेत्र		वन्य जीव मण्डल	वन्य जीव परिक्षेत्र
बिलासपुर	बिलासपुर	सदर	घुमारवीं		
		स्वारघाट	झडुंता		
मण्डी	मण्डी	द्रंग	कोटली		सुन्दरनगर वन्य जीव परिक्षेत्र (बंदली वन्य प्राणी शरण्य
		कटौला	मण्डी		
	नाचन	नाचन			
	सुकेत	बलद्वाड़ा	झुंगी		
		कांगू	सरकाघाट		
		जैदेवी	सुकेत		
	जोगिन्द्रनगर	धर्मपुर	लड़भड़ोल		
		जोगिन्द्रनगर	उरला		
		कमलाह			
कुल्लू	कुल्लू	कुल्लू	पतलीकुहल		मनाली वन्य जीव परिक्षेत्र काईस और मनाली वन्य प्राणी शरण्य
		मनाली	नग्गर		
		भुट्टी			
	पार्वती	भून्तर	जरी		
		हुरला			
	बन्जार(सराज)	सैंज	तीर्थन		
	आनी	अरसू	नीथर		
लाहौल स्पीति	लाहौल	पटन	केंलाग	स्पीति वन्य जीव	1. काजा वन्य जीव परिक्षेत्र (चद्रंताल वन्य प्राणी शरण्य को छोड़कर 2. ताबो वन्य प्राणी परिक्षेत्र
किन्नौर	किन्नौर	कटगांव	निचार		
		भावानगर	मालिंग		
		पूह			
शिमला	शिमला	कोटी	मशोवरा		
		तारादेवी			
	ठियोग	वलसन	ठियोग		
		कोटखाई			
	रोहडू	जुब्बल	खशधार		
		सरस्वतीनगर	डोडराक्वार		
	चौपाल	बमटा	नेरवा		
		चौपाल	सरैन		
		कंडा	थरोच		
	रामपुर	सराहन			
कुल	**16**	**56**		**2**	**5 वन्य प्राणी वन परिक्षेत्र**

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना

लक्ष्य

हिमाचल प्रदेश राज्य में सतत् सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए वनों से उत्पन्न परितन्त्र सेवाओं में सुधार किया जाना है।

परियोजना का ध्येय

परियोजना क्षेत्र में वन पारितन्त्रों का समझे–बूझे कार्य–कलापों द्वारा बेहतर प्रबन्धन प्रदान करना जिससे की वनों में वृद्धि हो, जैव–विविधता का सरंक्षण हो, समुदाय की आजीविका में सुधार एवं संस्थागत क्षमता का सुदृढ़िकरण हो।

परियोजना के घटक

- ★सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन
- ★जैव–विविधता संरक्षण
- ★आजीविका सुधार सहयोग
- ★संस्थागत क्षमता सुदृढ़िकरण

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक एवं आर्थिक विकास की ओर एक कदम।

मुख्य विशेषताएं

1. जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) द्वारा वित्त पोषित
2. परियोजना समझौता पर 29 मार्च, 2018 को टोक्यो–जापान में हस्ताक्षर किए गए
3. 800 करोड़ रूपये का कुल परिव्यय (80% ऋण और 20 प्रतिशत राज्य का योगदान)
4. परियोजना अवधिः 10 साल (2018–2019 से 2027–2028), परियोजना को तीन चरणों में विभाजित किया गया है, प्रारंभिक चरण 2 वर्ष, कार्यान्वयन चरण 6 वर्ष और समापन चरण 2 वर्ष
5. परियोजना मुख्यालय शिमला एवं क्षेत्रीय कार्यालय कुल्लू और रामपुर में छः जिलों (किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू और लाहौल एवं स्पिति) में कार्यान्वित
6. 7 वन वृतों के 18 वन मण्डलों के 61 वन परिक्षेत्रों में कार्य किए जाएंगे

बिलासपुर वृत स्तरिय पौधशाला

मुख्य गतिविधियां

समुदाय के साथ विचार–विमर्ष उपरान्त बनाई गई 460 सूक्ष्म योजनाओं के अनुसार निम्नलिखित गतिविधियां क्रियान्वित की जा रही हैं:–

- ✯ अपघटित वन क्षेत्रों को सघन वन बनाने हेतु पौधारोपण
- ✯ चरागाह सुधार के कार्य
- ✯ मिट्टी एवं जल संरक्षण हेतु कार्य
- ✯ वनों का आग से बचाव
- ✯ खरपतवार नष्ट करने के कार्य
- ✯ मानव–वन्यप्राणी संघर्ष संबन्धित मामलों से निपटने हेतु 16 त्वरित कार्यवाही दल का सृजन
- ✯ जैव–विविधता गलियारे पर अध्ययन
- ✯ जैव–विविधता गणना के लिए बुनियादी अध्ययन
- ✯ सामुदायिक आजीविका सुधार गतिविधियां
- ✯ औषधीय पौधों पर आधारित आजीविका सुधार गतिविधियां जिसके लिए राज्य स्तर पर हिम जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ का गठन
- ✯ विभिन्न भागीदारों की क्षमता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक यात्राएं आयोजित करने का प्रावधान

जाइका सैंज वन पौधशाला, ठियोग वन मण्डल

जाइका वानिकी परियोजना से प्रदेश में पारिस्थितिकीय तंत्र प्रबंधन और आय में वृद्धि

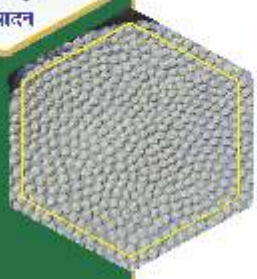

महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए जाईका वानिकी परियोजना
अतिरिक्त आय का एक महत्वपूर्ण साधन बनी
JICA
निकिता
स्वयं सहायता समूह
दाल-बड़ी
उत्पादन
बढ़ें
स्वावलम्बन
की
ओर...
लक्ष्मी
स्वयं सहायता समूह
सीरा
उत्पादन
निकिता एवं लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह
व्यावसायिक योजना निर्माण पर कार्यशाला

आजीविका वर्धन को समर्पित जाईका वानिकी परियोजना
JICA
जंगल को बचाना है
अपनी आजीविका को बढ़ाना है

माननीय मुख्यमंत्री द्वारा जाइका वानिकी परियोजना की वेबसाइट का शुभारंभ

माननीय मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जी ने 16.03.2021 को राज्य में जाइका परियोजना के अंतर्गत वानिकी और अन्य गतिविधियों तक पहुंच स्थापित करने हेतु जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जाइका) परियोजना की वेबसाइट jicahpforestryproject.com का शुभारंभ किया। इस मौके पर वन मंत्री श्री राकेश पठानिया जी, प्रधान मुख्य अरण्यपाल (हॉफ) डॉ. सविता, जाइका मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्यालय जाइका परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा और वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य परियोजना क्षेत्र में पारिस्थितिकीय तंत्र में वृद्धि और प्रबंधन करना है। यह परियोजना जैव विविधता और जल स्त्रोतों के संरक्षण, भू–क्षरण को रोकने और स्थानीय समुदाय को स्थायी वैकल्पिक आजीविका स्थापित करने के लिए आवश्यक समर्थन के साथ पारिस्थितिकीय तंत्र में सुधार की दिशा में सहयोग कर रही है। यह परियोजना 800 करोड़ रुपये की है और यह राज्य के छह जिलों–बिलासपुर, शिमला, मंडी, कुल्लू, किन्नौर और लाहौल–स्पीति में क्रियान्वित की जा रही है। जाइका के अंतर्गत 7 वन वृत, 8 वन मंडल, 61 वन परिक्षेत्र और 400 ग्राम वन विकास समितियां, 60 जैव विविधता प्रबंधन उप–समितियां, 920 स्वयं सहायता समूह और सांझा रूचि समूह शामिल हैं। यह परियोजना मार्च 2028 में पूरी हो जाएगी।

PROJECT FOR IMPROVEMENT OF HIMACHAL PRADESH FOREST ECOSYSTEMS MANAGEMENT & LIVELIHOODS
PILOT PROJECT ON HYDRO CULTURAL FODDER PRODUCTION
JICA
ABOUT PILOT PROJECT
ABOUT USER GROUP
SAMPLE DESIGN
Unique Effort by JICA Forestry Project:
PRODUCTION OF DIFFERENT SEED FODDER
(Wheat, Maize and Barley)
PRODUCTION PROCESS:
HYDRO CULTURAL BARLEY FODDER
HYDRO CULTURAL WHEAT FODDER
HYDRO CULTURAL MAIZE FODDER
GENERAL OBSERVATION TILL NOW:

ABOUT SELF HELP GROUP
PROJECT FOR IMPROVEMENT OF HIMACHAL PRADESH
FOREST ECOSYSTEMS MANAGEMENT & LIVELIHOODS (JICA ASSISTED)
INCOME GENERATION ACTIVITY - VERMICOMPOST
JICA
Meeting with SHG Regarding IGA
Business Plan & Resolution Passed by SHG for Implementation of IGA
Training Conducted by Project
Beneficiaries Details
Self Help Group Proceeding Register
Product Packaging

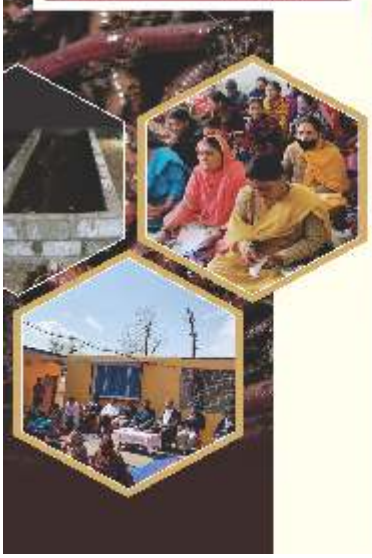

माननीय वन मन्त्री श्री राकेश पठानिया ने किया परियोजना मुख्यालय का दौरा : एक रिपोर्ट

माननीय वन और युवा सेवाएं व खेल मंत्री, श्री राकेश पठानिया ने 21 अगस्त, 2020 को शिमला के पॉटर्स हिल में जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जाइका) द्वारा वित्तपोषित "हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" के मुख्यालय का दौरा किया। वन मंत्री का कार्यभार संभालने के बाद परियोजना मुख्यालय की यह उनकी पहली यात्रा थी। श्री राकेश पठानिया ने इस अवसर पर परियोजना के अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों के साथ परियोजना को लेकर सभी महत्वपूर्ण विषयों और बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार जैसे महत्वपूर्ण व महत्वाकांक्षी कार्यों में स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

उन्होंने इस अवसर पर परियोजना द्वारा तैयार की गई तीन पुस्तिकाओं –सामुदायिक विकास प्रशिक्षक नियमावली, जैंडर एक्शन प्लान और फील्ड कार्यकर्ताओं के लिए सूक्ष्म नियोजन दिशा–निर्देश का विमोचन भी किया। श्री पठानिया ने कार्यक्रम की समाप्ति के बाद परियोजना परिसर में चिनार का पौधा लगाया।

सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन

हिमाचल प्रदेश एक पर्वतीय राज्य है जो उत्तर भारत के हिमालय क्षेत्र में स्थित है, जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 55,673 वर्ग कि.मी. है और जनसंख्या 68.65 लाख (2011 की जनगणना के अनुसार) है। इसकी उतार–चढ़ाव वाली स्थलाकृति और विविध जलवायु की विस्तृत श्रृंखला के कारण राज्य में विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिकी तंत्र हैं। मुख्यतः, 'वन पारिस्थितिकी तंत्र'।

हिमाचल प्रदेश ने भारत के पहाड़ी इलाकों के लिए 66.7% वानिकी निति आवरण का राष्ट्रीय लक्ष्य अभी पूरा नहीं किया है और न ही हिमाचल प्रदेश वानिकी क्षेत्र नीति और रणनीति, 2005 का 35.5% का निर्धारित लक्ष्य पूरा कर पाया है। राज्य स्तर पर चूंकि प्राकृतिक वन संरक्षण के लिए प्राकृतिक उत्थान (NR) और वन विभाग हिमाचल प्रदेश (HPFD) के निंरतर प्रयासों के माध्यम से भारतीय वन रिपॉर्ट 2009 से ISFR 2015 के बीच खुले वन क्षेत्रों में धीरे–धीरे सुधार हो रहा है, तथापि खुले वातावरण का अनुपात अभी भी 34.6% के उच्च स्तर पर हुआ है।

घासनियों और चारागाह जो कि पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण है और हि0 प्र0 में लोगों की आजीविका के लिए भी आवश्यक है, जिसकी गिरावट काफी हद–तक अत्याधिक या अनियंत्रित चराई के कारण हुई है। वन, घासनी व चारागाह दोनों के अपघटन से मिट्टी के कटाव के साथ–साथ भूस्खलन भी होता है जो हिमाचल प्रदेश में अकसर देखा गया है, इसलिए हिमाचल प्रदेश में वन पारिस्थितिकी तन्त्र सेवाओं विशेषकर जल स्त्रोतों के संरक्षण के साथ–साथ भू–क्षरण व भूमि कटाव की रोकथाम के लिए वन क्षेत्र की घासनियों और चारागाहों में सहभागी प्रबन्धन हिमाचल प्रदेश राज्य वानिकी क्षेत्र नीति तथा रणनीति, (2005) के अनूरूप है और इसकी निरन्तर आवयश्कता है।

इसी के चलते हिमाचल प्रदेश में जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जाइका) द्वारा वित्तपोषित "हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना" का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस परियोजना के माध्यम से राज्य की 10984 हैक्टेयर भूमि पर वृक्षारोपण किया जाना है। इसके अलावा घने वनों/खुले वनों का सुधार, लैंटाना उन्मूलन, चरागाहों का सुधार भी शामिल है। वन वृत और परिक्षेत्र स्तर की नर्सरियों में स्थानीय प्रजातियों के उच्च–गुणवता वाले पौधे तैयार करने के लिए मॉडल नर्सरी विकसित करने का कार्य प्रगति पर है।

रोहडू वन मंडल के खशधार वन परिक्षेत्र के तहत आने वाले ग्राम वन विकास समिति ढाक में जाइका वानिकी परियोजना की जागरूकता बैठक आयोजित की। जिसमें परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने ग्रामीणों को इस परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

कुल्लू वन मंडल के भुट्टी वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति मठाला पलालंग में ग्राम सभा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से वन विकास समिति मठाला पलालंग द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजना को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

रोहडू वन मंडल के खशधार वन परिक्षेत्र में परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम पंचायत ढाक का दौरा किया तथा ग्रामीणों को इस परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् परियोजना के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति ढाक का गठन किया गया।

हिमाचल प्रदेश सरकार जापान की जाइका एजेंसी के सहयोग से प्रदेश में हरित आवरण बढ़ाने के लिए 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना' का कार्यान्वयन कर रही है। जिसके लिए 800 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है, जिसमें से 640 करोड़ रुपए जाइका की तरफ से प्राप्त होंगे और 160 करोड़ हिमाचल सरकार द्वारा खर्च किए जा रहे हैं। इस संबध में नोगली में परियोजना की जागरूकता और प्रशिक्षण बैठक की गई और इस योजना से आम लोगों व् पर्यावरण को हो रहे लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

श्री के.बी. नेगी, वन मंडल अधिकारी आनी, जिला कुल्लू की अध्यक्षता में मंडल प्रबंधन इकाई स्तर पर लुहरी, निथर वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना की एक समवर्ती निगरानी और आवधिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

रोहडू वन मंडल के खशधार वन परिक्षेत्र के अंतर्गत सिंदासली में हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना की जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया।

वन्य जीव परिक्षेत्र कुल्लू, वन मंडल कुल्लू के अधीन आने वाले जैव विविधता प्रबंधन समिति लोट में सतोयामा पर प्रारंभिक गतिविधियां शुरू करने के लिए बैठक आयोजित की गई।

रोहडू वन मंडल के खशधार वन परिक्षेत्र के अंतर्गत वन विकास समिति गांवसारी का गठन किया गया।

जोगिन्दरनगर वन मंडल के अंतर्गत आने वाले विश्राम गृह चौंतड़ा में एक दिवसीय जाइका वानिकी परियोजना जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने की। जिसमें उन्होंने जोगिन्दरनगर में ग्राम वन विकास समितियों को परियोजना के विभिन्न आयामों की जानकारी दी और इस योजना में अधिक से अधिक सहभागिता निभाने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में जोगिन्दरनगर वन मंडल के अधिकारी व अन्य कर्मचारी भी शामिल हुए।

बिलासपुर वन मंडल के अंतर्गत आने वाले सदर वन परिक्षेत्र में ग्राम वन विकास समिति कुड्डी का गठन किया गया।

जोगिन्दरनगर वन मंडल के अंतर्गत आने वाले लडभड़ोल वन परिक्षेत्र के रोपड़ी में जाइका वानिकी परियोजना की जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें परियोजना स्टाफ ने ग्रामीणों को परियोजना के उदेश्यों तथा लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस योजना को अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसके उपरांत परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ मिलकर वन विकास समिति रोपड़ी का गठन किया गया।

वन मंडल एवं वन परिक्षेत्र चौपाल की ग्राम पंचायत चपांडली के चिल्ला वार्ड में ग्रामीण सहभागिता समीक्षा बैठक आयोजित की गई। जिसके माध्यम से सूक्ष्म योजना का निर्माण स्थानीय समुदाय द्वारा परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ मिलकर किया गया।

चौपाल वन मंडल के कण्डा वन परिक्षेत्र के नौरा में जाइका वानिकी परियोजना की जागरूकता बैठक आयोजित की गई। जिसमें परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने किसानों को इस परियोजना के बारे में जानकारी दी और इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया तथा उसके बाद ग्राम वन विकास समिति नौरा का गठन किया गया।

रोहडू वन मंडल के खशधार वन परिक्षेत्र में परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों ने ग्रामीणों के साथ मिलकर परियोजना के अंतर्गत डाली ग्राम वन विकास समिति का गठन किया।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति बेरी रजादियान का गठन किया गया।

आनी वन मंडल के आरसु वन परिक्षेत्र की खरगा पंचायत के टिकरी वार्ड में जाइका वानिकी परियोजना की जागरूकता सभा का आयोजन किया गया। जिसमें परियोजना के अधिकारियों और कर्मचारियों ने ग्रामीणों को परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् परियोजना के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति टिकरी का गठन किया गया।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने वन मंडल ठियोग, वन परिक्षेत्र कोटखाई के अंतर्गत आने वाले कडेल वार्ड का दौरा किया तथा इस एक दिवसीय कार्यशाला में जनसभा को सम्बोधित करते हुए परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस परियोजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत निचली भटेड में परियोजना के अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लू के अधीन आने वाले वन विकास समिति सारी–2 के सदस्यों व गाँव के युवाओं ने पौधरोपण किया।

जोगिन्दरनगर वन मंडल के वन परिक्षेत्र कमलाह के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत सारी में परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से फिहाद वन विकास समिति का गठन किया गया।

रोहडू वन मंडल के खशधार वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत रोहल में रोहल–1 और रोहल–2 ग्राम वन विकास समितियों का जाइका वानिकी परियोजना के तहत गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के वन परिक्षेत्र सदर में परियोजना क्षेत्र के अंतर्गत धारटटोह वन विकास समिति का गठन किया गया।

वन मंडल जोगिन्दरनगर के वन परिक्षेत्र कमलाह के अधीन आने वाली ग्राम पंचायत सारी में ग्रामीणों ने परियोजना कर्मचारियों के साथ मिलकर ग्रामीण सहभागिता समीक्षा बैठक की।

कुल्लू वन मंडल के वन परिक्षेत्र भुट्टी में परियोजना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत डुघीलग में वन विकास समिति का गठन किया गया।

बंजार वन मंडल के सैंज वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना क्षेत्र के अंतर्गत तालरा ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अधीन गठित की गई ग्राम वन विकास समिति लखदाता पीर में परियोजना स्टाफ ने समूह सदस्यों के साथ ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक की।

मण्डी वन मंडल के कटौला वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत नवले के निशु परनु वार्ड में परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह/साँझा रुचि समूह के गठन के संबंध में परियोजना अधिकारियों व कर्मचरियों ने ग्रामीणों के साथ बैठक की।

मण्डी वन मंडल के कटौला वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत नवले के डुकी वार्ड में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह/साँझा रुचि समूह के गठन के संबंध में लोगों के साथ बैठक की।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में परियोजना के अधीन सिहरा ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

सुकेत वन मंडल के बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति मड़ोली के अंतर्गत साँझा रुचि समूह का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समिति मलोन पंगवाणा के सदस्यों के साथ परियोजना अधिकारियों व् कर्मचारियों ने ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक की।

सुकेत वन मंडल के जय देवी वन परिक्षेत्र में जाईका वानिकी परियोजना क्षेत्र के अंतर्गत औशी और बेहली वार्ड में ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समिति सिद्ध बाबा बालक नाथ क्यारिआं में परियोजना स्टाफ ने समूह सदस्यों के साथ ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक की।

वन मंडल बिलासपुर के वन परिक्षेत्र घुमारवीं के अधीन गठित की गई ग्राम वन विकास समिति अमरपुर के सदस्यों व ग्रामीणों के साथ परियोजना के कर्मचारियों ने सामुदायिक हॉल के निर्माण और स्थान चयन के लिए उनकी सहमति के बारे में बैठक की।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति निहारखां बसला का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अधीन बंदला ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत मलांगन में ग्राम सभा आयोजित हुई जिसमें परियोजना के स्टाफ के सहयोग से वन विकास समिति प्रकृति द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र चौपाल की ग्राम पंचायत गोर्ली मरोग में परियोजना स्टाफ की सहायता से मरोग वार्ड में ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

सुकेत वन मंडल के कांगू वन परिक्षेत्र में ग्राम वन विकास समिति अप्पर बड़ी के अंतर्गत साँझा रूचि समूह का गठन किया गया।

सुकेत वन मंडल के सरकाघाट वन परिक्षेत्र में ग्राम वन विकास समिति द्रुमल के अधीन साँझा रूचि समूह का गठन किया गया।

सुकेत वन मंडल के बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र में ग्राम वन विकास समिति बान्हु के अंतर्गत साँझा रूचि समूह का गठन किया गया।

सुकेत वन मंडल के बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समिति घनेड़ा के सदस्यों ने ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक में भाग लिया।

सुकेत वन मंडल के बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारियों व् कर्मचारियों ने वन विकास समिति सरुआ धार–1 के सदस्यों के साथ ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक की।

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्त पोषित)

ताने-बाने के धागों से, बुनें आत्मनिर्भरता का चोला

समूह सदस्य

तैयार उत्पाद को प्रर्दशित करते समूह सदस्य

विक्रय हेतु तैयार उत्पाद

एक झलक

व्यवसायिक योजना प्रारूप

"हथकरघा" (प्रति समूह)

रिवालविंग फंड आवंटन -	₹ 1,00,000/-
पूंजीगत लागत (लगभग)	₹ 1,00,000/-
आवर्ती लागत (लगभग)	₹ 1,25,000/-
कौशल प्रशिक्षण (लगभग)	₹ 50,000/-

समूहों के उत्थान हेतु परियोजना के प्रावधान:

- नियमित बैठकों, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण द्वारा समूह सदस्यों का क्षमता निर्माण
- समूह द्वारा चयनित आजीविका वर्धन गतिविधि अनुसार 'व्यावसायिक योजना' के निर्माण में सहयोग
- समूह सदस्यों को नि:शुल्क कौशल आधारित प्रशिक्षण
- प्रत्येक ग्रामीण वन विकास समिति के दो समूहों को परियोजना द्वारा प्रति समूह एक लाख रूपये की राशि रिवॉलविंग फंड के रूप में देने का प्रावधान
- समाज के कमजोर वर्ग के लिए उत्थान हेतु, पूंजी लागत का 75 प्रतिशत परियोजना द्वारा वहन करने का प्रावधान
- समूह द्वारा तैयार उत्पाद की ब्राडिंग एवं मार्केटिंग में परियोजना सहयोग
- व्यावसायिक योजना के आधार पर समूह द्वारा किसी बैंक से ऋण लेने की स्थिति में, ब्याज राशि का 5 प्रतिशत परियोजना द्वारा वहन करने का प्रावधान

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

जाइका वानिकी परियोजना, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-5, हिमाचल प्रदेश

दूरभाष: 0177-2830217, ई० मेल :- **cpdjica2018hpfd@gmail.com** **Website: https://jicahpforestryproject.com**

हिमाचल के 376 गांवों में जापान की मदद से चलाई जा रही जापान इंटरनेशनल को–ऑपरेटिव (जाइका) परियोजना चरणबद्ध तरीके से कार्य कर रही है। जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया तथा परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला के कर्मचारियों ने शिमला वन मंडल के तारादेवी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित किये गए ग्राम वन विकास समिति पनेश का दौरा किया तथा समिति में किये जा रहे कार्यों का निरिक्षण किया।

उन्होंने पौधरोपण, खेतों की बाड़बंदी, नालियों की खुदाई, लेंटाना उन्मूलन का निरीक्षण किया। श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने लोगों को एलोविरा की खेती करने की सलाह दी। कार्यक्रम में कृषि विकास अधिकारी (मशोबरा) खेमराज शर्मा ने केंचुआ खाद के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। ग्राम बन बिकास समिति के अध्यक्ष रणजीत ठाकुर, सचिव एवं गलोट पंचायत के उपप्रधान राजेंद्र ठाकुर, सदस्य अजय गर्ग, कमलेश ठाकुर, अमरचंद, जगदीश, निशा, मंजू, पिंकू भी मौजूद रहे।

परियोजना के कर्मचारियों ने वन मंडल व वन परिक्षेत्र मण्डी के गनेहड़ वार्ड की महिलाओं के साथ बैठक की तथा उन्हें परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए प्रेरित किया।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र की बालघार ग्राम वन विकास समिति के स्वयं सहायता समूह व साँझा रूचि समूह के सदस्यों ने बैठक में आजीविका गतिविधियों पर चर्चा की।

वन अग्नि रोकथाम व् नियंत्रण जागरूकता अभियान 2021 के अंतर्गत वनों की आग की रोकथाम हेतु प्रचार वन मंडल शिमला द्वारा बिलासपुर वन मंडल के सहयोग से जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत चडोल में वन विकास समिति चडोल व समिति के अधीन गठित स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने ग्राम सभा की बैठक आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति चडोल के द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजना को ग्राम सभा में स्वीकृती दी गई।

कुल्लू वन मंडल के भुट्टी वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति बड़ाग्रां में ग्राम सभा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से वन विकास समिति बड़ाग्रां द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजना को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

कुल्लू वन मंडल के भुट्टी वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समिति डुगिलग में ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक की।

वन्यजीव मंडल कुल्लू के वन्यजीव परिक्षेत्र सुन्दरनगर की ग्राम पंचायत/जैव विविधता प्रबंधन समिति मलोह में जाईका वानिकी परियोजना की जागरूकता सभा का आयोजन किया गया। जिसमें परियोजना के अधिकारियों और कर्मचारियों ने ग्रामीणों को परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र में परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति पराहु के सदस्यों के साथ बैठक की। इस बैठक में परियोजना कर्मचारियों ने समिति के सदस्यों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों और आय सृजन के संबंध में विस्तृत जानकारी दी।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र चौपाल के जुब्बर वार्ड में परियोजना की जागरूकता सभा का आयोजन किया गया। जिसमें परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने ग्रामीणों को परियोजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी और इस योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया तथा परियोजना के अधीन जुब्बर ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत कुठेला में वन विकास समिति कुल्ह की ग्राम सभा बैठक आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति कुल्ह द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत बेरी में परियोजना कर्मचारियों ने वन विकास समिति श्रीनाग मंदिर के सदस्यों के साथ बैठक की। जिसमें ग्राम पंचायत बेरी के वार्ड–7 में परियोजना के अधीन स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत व वन विकास समिति कुड्डी के अधीन दो स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया।

पार्वती वन मंडल के हुरला वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के तहत गठित ग्राम वन विकास समिति कमन्द के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत तँबोल में ग्राम सभा आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति धनस्वाई द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया। परियोजना स्टाफ ने महिला मंडल धनस्वाई के साथ भी बैठक की तथा आजीविका बढ़ाने वाली गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा की।

परियोजना के तहत पार्वती वन मंडल के हुरला वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति निग्ना के अंतर्गत परियोजना स्टाफ की सहायता से स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के जगातखाना पौधशाला में विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पौधे उगाये जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में मंडल प्रबंधन इकाई बिलासपुर के कर्मचारियों ने पौधशाला का दौरा किया तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में ग्राम वन विकास समिति धार के अधीन स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत मॉथ में ग्राम सभा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति मॉथ द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र की वन विकास समिति प्राहो ने ग्राम सभा की बैठक आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति प्राहो द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में स्वीकृती दी गई।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति निहारखंड बसला के अंतर्गत परियोजना स्टाफ के सहायता से दो स्वयं सहायता समुहों का गठन किया गया।

चौपाल वन मंडल के मरोग ब्लॉक की ग्राम पंचायत मकरोग के घिंचना वार्ड में ग्राम वन विकास समिति का गठन किया गया।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लू में रायल गुंगरा ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों ने बैठक आयोजित की। जिसमें गैर सरकारी संगठन (NGO) के अधीन तीन समूहों का गठन किया गया जो की सुक्ष्म विकास योजना का भाग हैं।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) रामपुर वन मण्डल का दौरा किया तथा ग्राम वन विकास समितियों व अग्रिम पंक्ति के वन कर्मचारियों के साथ हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना की विस्तृत जानकारी सांझा की।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) किन्नौर वन मण्डल दौरे के दौरान ग्राम वन विकास समितियों व अग्रिम पंक्ति के वन कर्मचारियों के साथ हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना की विस्तृत जानकारी सांझा करते हुए।

जोगिन्दरनगर वन मंडल के उरला वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारियों व् कर्मचारियों ने वन विकास समिति गवाली के सदस्यों के साथ ग्रामीण भागीदारी की समीक्षा बैठक की।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत गन्धीर में परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति गन्धीर द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

पौधशालाओं का सुधार व पौध उत्पादन

लक्षित वन परिक्षेत्रों में पौधशाला उगाने तथा कार्यकलाप सम्बन्धी क्षमता बढ़ाने के लिए पौधशालाओं का उन्नयन किया जा रहा है। परियोजना में वन परिक्षेत्र स्तर की 51 तथा वृत स्तर की 7 पौधशालाऐं सुधारी जा रही हैं। वृत स्तर की पौधशालाओं को पौध उत्पादन में एक उदाहरण के उद्देश्य से बनाया जा रहा है जिसे यथासम्भव सम्पूर्ण राज्य में दोहराया जाएगा।

सैंज वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली जाइका नर्सरी छन्नी नाल में विभिन्न प्रकार की पौध तैयार की जा रही है। इस सम्बन्ध में जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने पौधशाला का दौरा तथा तैयार पौध का निरीक्षण किया।

मण्डी वन मंडल के कटौला वन परिक्षेत्र के अधीन आने वाली वृत्त स्तर की नर्सरी में विभिन्न प्रकार की पौध तैयार करने के लिए पॉलीबैग भरने का कार्य किया गया।

सामुदायिक विकास कार्य
(Community Development Works)

शिमला वन मंडल के तारादेवी वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समिति पनेश में परियोजना के अंतर्गत खेतों में बाड़ लगाने का कार्य किया गया।

शिमला वन मंडल के तारादेवी वन परिक्षेत्र के अधीन आने वाली ग्राम वन विकास समिति कण्डा के ढाला मन्दिर क्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत विस्तार एवं सुधार का कार्य सम्पूर्ण कर दिया गया।

जैव विविधता संरक्षण

हि.प्र. हिमालयन जैव–विविधिता का मुख्य क्षेत्र है और वनस्पति तथा वन्य जीव भण्डार से परिपूर्ण है। भारत में पाई जाने वाली वनस्पति तथा वन्य जीवों में प्रकृति संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संघ की सूची में लुप्त होने वाली प्रजातियों में से हि.प्र. में वनस्पति का 7.3% तथा वन्य प्राणी का 7.4% पाया जाता है।

हि.प्र. प्रवासी पक्षियों का एक विख्यात पड़ाव क्षेत्र है। प्रदेश में वन्य जीवों में प्रकृति संरक्षण के लिए 5 राष्ट्रीय उद्यान, 26 वन्य प्राणी शरण्य स्थल तथा 3 सुरक्षा स्थलों की पहचान करके उद्घोषित किया गया है।

इन सुरक्षा स्थल तन्त्रों के अन्तर्गत 8358.48 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पड़ता है। इसके अतिरिक्त हि.प्र. में 27 मुख्य जैव विविधिता क्षेत्र है जिन्हें विश्वव्यापी जैव–विविधिता में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने के लिए जाना जाता है। फिर भी उच्च जैव विविधिता के लिए बहुत सी चुनौतियां है, जैसे घुमन्तू चरवाह द्वारा वन्य प्राणी निवास तथा सुरक्षा स्थलों को क्षति, ईंधन तथा चारे का अत्याधिक दोहन, वनों की आग, अवैध शिकार, विदेशी प्रजातियों / खरपतवार का प्रसार तथा विकासात्मक गतिविधियों के लिए वन भूमि का हस्तान्तरण इत्यादि।

मुख्यतः विकासात्मक गतिविधियों तथा दूसरे मानव हस्तक्षेपों से वन्य प्राणी निवास स्थानों के विघटन के कारण विशेषकर सुरक्षित स्थलों से बाहर कुछ हिस्सों में मानव वन्य जीवों के संघर्ष के मामले प्रचलित है। इसलिए हि.प्र. में जैव–विविधिता संरक्षण गतिविधियों को बढ़ाने की निरन्तर आवयश्कता है।

परियोजना का उद्देश्य मानव–वन्यजीव संघर्ष, जंगल की आग, अवैध कटाई आदि के आपातकालीन मामलों को दूर करने के लिए ''रैपिड रिस्पांस'' टीमों को मजबूत करना है। इसके अलावा, वन विभाग हिमाचल प्रदेश वन्यजीव प्रभाग के साथ मिलकर, परियोजना अन्य संसाधनों जैसे कि जैव विविधता गलियारे पर पायलट परियोजना, जैव विविधता मूल्यांकन के डिजाइन, Human SL Interface, Species Conservation, व संरक्षित क्षेत्रों और उसके आसपास वृक्षारोपण भी करेगी।

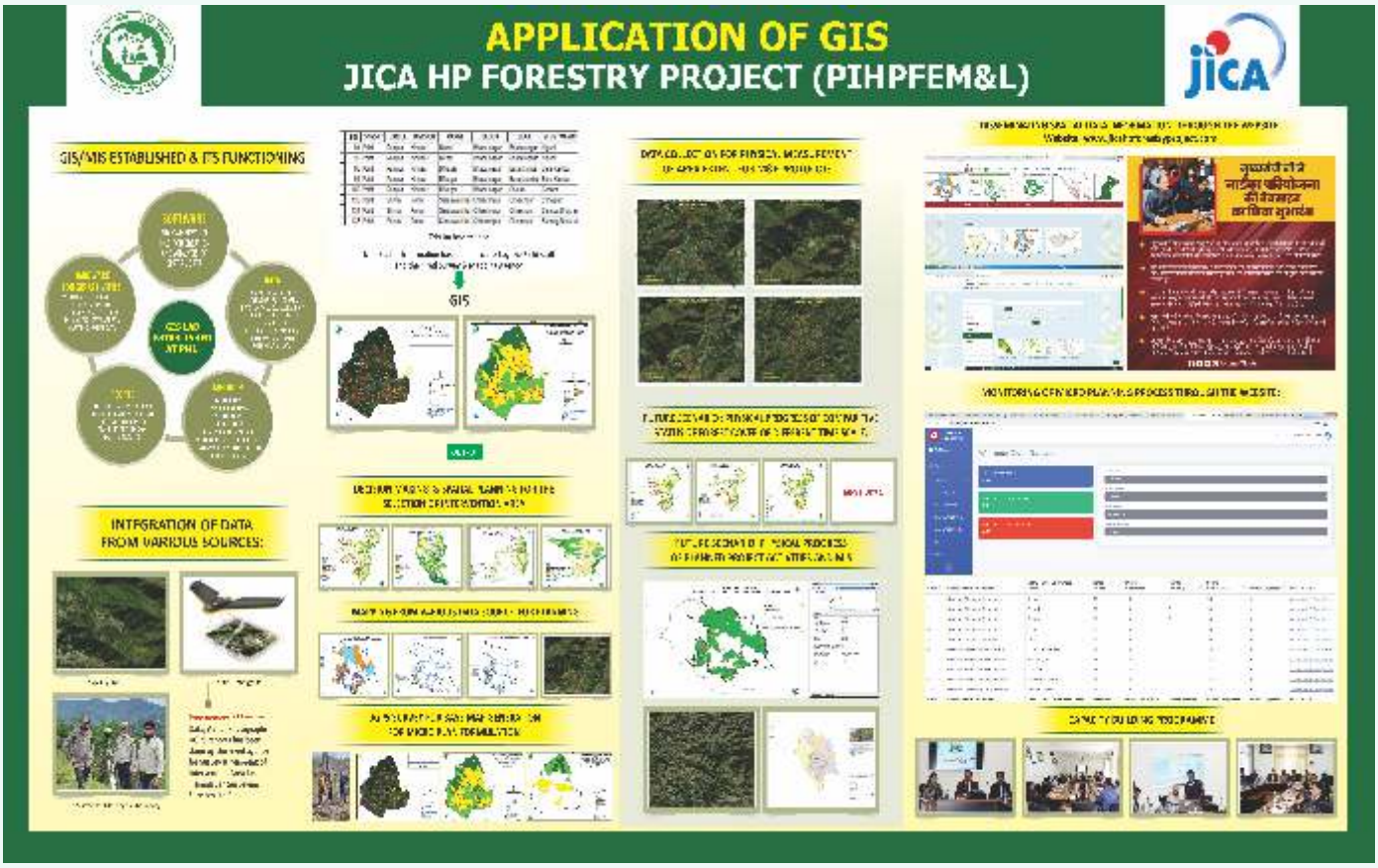

डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (DGPS) की सहायता से जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत आने वाले विभिन्न स्थानों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। इसी के चलते बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में धार ग्राम वन विकास समिति का सर्वेक्षण किया गया और समिति की सीमारेखा व पौधारोपण की सीमा चिन्हित की गई। इस कार्य में सर्वेक्षण टीम के साथ प्रोग्राम प्रबन्धक (GIS/MIS), परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला और मंडल प्रबंधन इकाई बिलासपुर के कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (DGPS) की सहायता से जाईका वानिकी परियोजना के अंतर्गत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। इसी के चलते सर्वेक्षण टीम के साथ प्रोग्राम प्रबन्धक (GIS/MIS),परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला और मंडल प्रबंधन इकाई बिलासपुर के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र के निहालखान बसला ग्राम वन विकास समिति का सर्वेक्षण किया गया और समिति की सीमारेखा व पौधारोपण की सीमा को चिन्हित किया।

परियोजना के स्टाफ ने वन्यप्राणी कुल्लू के वन्यप्राणी परिक्षेत्र मनाली के अधीन आने वाली जैव विविधता प्रबंधन उप–समिति कैश के सदस्यों के साथ बैठक की।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन्यप्राणी परिक्षेत्र मनाली की ग्राम पंचायत व जैव विविधता प्रबंधन समिति मनाली की उप समितियों का गठन किया गया।

वन्य प्राणी परिक्षेत्र सुंदरनगर के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत मलोह के वार्ड 6 और 7 में जैव विविधता प्रबंधन समिति की उप समितियों का गठन किया गया।

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ

वनों से अत्यधिक दोहन तथा अन्य कई कारणों से जड़ी–बूटियों के अपघटन की रोकथाम की दिशा में जाइका वित् पोषित 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना' के अतंर्गत पीएमयू स्तर पर जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता समितियों के माध्यम से जड़ी–बूटियों के पुर्नउत्थान व संवर्धन की दिशा में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इससे जहां एक ओर लुप्त प्रायः होने वाली जड़ी–बूटियों का पुर्नउत्थान संभव हो पाएगा वहीं दूसरी ओर वनों पर आश्रित जन समुदाय को आय का एक अतिरिक्त साधन सतत् रूप में उपलब्ध हो पाएगा। राज्य में पहली बार इस तरह के जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ का गठन किया गया है जोकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को वन भूमि और स्थानीय समुदायों की निजी भूमि में औषधीय पौधों की खेती करने हेतु मार्गदर्शन करेगा। यह प्रकोष्ठ स्थानीय समुदायों को औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न स्तरों पर तकनीकी जानकारी उपलब्ध करवाएगा। इसके अलावा सरकार द्वारा चलाई गई महत्वाकांक्षी ''वन समृद्धि, जन समृद्धि'' योजना के उद्देश्यों को पूरा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ के कार्य:

- ❖ परियोजना हस्तक्षेप क्षेत्र में विशेष रूप से औशधीय पौधों (एनटीएफपी) के निरंतर निकास को विनियमित करना।
- ❖ युवाओं को स्थायी आजीविका और आय सृजन के अवसर प्रदान करने के लिए बढ़ावा देने वाली कुछ विशिष्ट प्रजातियों के एक्स–सीटू प्रसार को मानकीकृत करना।
- ❖ 11 प्रस्तावित समूहों में क्लस्टर स्तर पर ''हिम जड़ी–बूटी सहकारी समितियों'' का गठन करना।

एलो वेरा

पामारोसा घास

गुच्छी

- ❖ उच्च मूल्य वाले प्रमुख औषधीय पौधों सहित चयनित एनटीएफपी के मूल्यवर्धन (Value addition) पर कार्य करना।
- ❖ चुने हुए उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों को उगाने के लिए कृषि तकनीक विकसित करने और सतत् दोहन मापदण्ड तैयार करने के लिए अनुसन्धान संस्थाओं से तालमेल स्थापित करना।
- ❖ उत्पादक संगठनों के प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण तथा व्यापार विकास सेवाओं की सुविधा प्रदान करना।
- ❖ औषधीय पौधों की खरीद और व्यापार के लिए स्ट्रीमलाइन मार्केटिंग चैनल और हिमाचल प्रदेश में औषधीय पौधों के उत्पादन के लिए एक ब्रांड बनाने के लिए कार्य करना।

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा किए जा रहे कार्यः

स्थानीय समुदायों की भागीदारी से जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ के माध्यम से जिला बिलासपुर में पामारोजा घास (सिंबोपोगोन मार्टिनी) व चील की पत्तियों से ब्रिकेट बनाने के लिए, चौपाल में सतुआ (पेरिस पॉलीफाइला) और मंडी व सुकेत में टौर की पत्तियों की पत्तल बनाने के लिए चयनित किए गए हैं, जो सभी स्थानीय समुदायों की भागीदारी के माध्यम से कार्यान्वयन के चरण में हैं। इसके अलावा अन्य उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की प्रजातियां जैसे पतीश (एकोनिटम हेट्रोफिलम), शतावरी (एसपैरागस रेसमोसस), घृतकुमारी (एलो वेरा/एलो बारबाडेन्सिस), कुटकी (पिक्रोराइजा कुरू) और चिरायता (स्वर्शिया कॉर्डाटा) पर कार्य किया जा रहा है। वित् वर्ष 2021–22 में आजीविका मॉडल और संबधित गतिविधियों को लागू करने के लिए परियोजना के तहत लगभग 50 लाख रूपए व्यय किए जाने का प्रावधान है।

वनकक्ड़ी

शतावरी

चौरा

काला जीरा

सतुवा

चिरायता

जिला बिलासपुर के किसान भवन में 6 मार्च, 2021 को जिला स्तरीय किसान जड़ी बूटी सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के अधिकारियों ने सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में विभिन्न किसान समूहों के अलावा कुछ स्थानीय स्तर की निजी कंपनियों ने भी भाग लिया और उनके द्वारा उगाई जा रही जड़ी–बूटियों की प्रदर्शनी लगाई। इस सम्मेलन में परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्पादकों को आ रही समस्यों पर भी विस्तृत चर्चा की।

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से आजीविका वर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए सुकेत वन मंडल के कांगू वन परिक्षेत्र के अधीन गठित ग्राम वन विकास समिति गमोहु एवं बह में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। गौरतलब है कि परियोजना द्वारा इस क्षेत्र में आय के अतिरिक्त स्त्रोतों को बढ़ावा देने के लिए स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को टोर वृक्ष के पत्तों से पत्तल बनाने को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

बिलासपुर वन मंडल व जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ शिमला के कर्मचारियों ने अमरपुर ढींगू (घुमारवीं) का दौरा किया तथा पामारोजा घास के लिए चिन्हित क्षेत्र में बनाई गई छोटी नालियां के कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया।

हाईड्रोकल्चर विधि द्वारा चारा उत्पादन

राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन पालन आजीविका की सामान्य गतिविधी है। अनेक घरों में मंदी के दिनों में हरे चारे की कमी हो जाती है। चारे की कमी यानी महिलाओ तथा घर की आर्थिकी पर अतिरिक्त बोझ। इसलिए हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एव आजीविका सुधार परियोजना द्वारा चारे के वैकल्पिक स्त्रोतों को खोज की जा रही है और "हाईड्रोकल्चर विधि द्वारा चारा उत्पादन के लिए एक पायलट परियोजना" पर शोध कार्य आरम्भ करवाया गया है। इसके लिए हनोल हाईड्रोएग्री एण्ड वर्क के साथ एक वर्ष के करार पर हस्ताक्षर किए गए हैं। जिसने 1 सितम्बर, 2020 से कार्य आरम्भ कर दिया है। हनोल हाईड्रोएग्री द्वारा कण्डा ग्राम वन विकास समिति, शिमला के तहत कण्डा मे हाईड्रोकल्चर द्वारा चारा उत्पादन इकाई स्थापित की गई है। इस हाईड्रोकल्चर चारा उत्पादन इकाई में मक्की, गेहूँ तथा जौ को नियंत्रित परिस्थितियों में उगाया जा रहा है । इस शोध कार्य हेतु कण्डा ग्राम वन विकास समिति के 10 घरों को चयनित किया गया है जहां व्यवहार्यता/ तकनीकी मूल्यांकन, आर्थिक मूल्यांकन, पशु स्वास्थ्य और उत्पादन मूल्यांकन पर शोध हो रहा है।

हाईड्रोकल्चर विधि द्वारा चारा उत्पादन

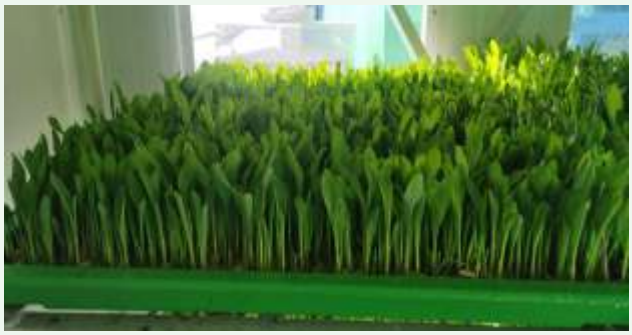

आजीविका सुधार घटक

ग्रामीण इलाकों के अधिकतम परिवार आज भी वन क्षेत्र से निकली ईंधन तथा चारे पर निर्भर करते हैं। अतः इस दिशा में सभी परिवारों को वन क्षेत्र पारिस्थितिकी तन्त्र सेवाओं का उपभोक्ता तथा लाभार्थी माना जा सकता है। घुमन्तू तथा अर्ध घुमन्तू समुदाय जैसे गद्दी और गुज्जर आदि के मामले में उनकी आजीविका की निरन्तरता के लिए पारिस्थितिकी तन्त्र की स्थिरता अति आवयश्क है क्योंकि इन समुदायों की आय का मुख्य स्त्रोत पशुपालन, ऊन और खालें, मांस तथा दुग्ध उत्पाद और वन क्षेत्रों से घास और चारा इत्यादि है। इस सन्दर्भ में जैसा कि हि.प्र. वन क्षेत्र नीति तथा रणनीति निर्धारण, 2005 के अन्तर्गत अपेक्षित है। इन पारिस्थितिकी तन्त्र सेवाओं के उपभोक्ताओं की संलिप्तता वन पारिस्थितिकी तन्त्र प्रंबधन के लिए नितांत आवयश्क है।

परियोजना के माध्यम से आजीविका सुधार सहयोग के अन्तर्गत ऐसी सामुदायिक विकास गतिविधियां की जाएगी जो वन पारिस्थितिकी तन्त्र पर दबाव कम करें तथा वन पारिस्थितिकी तन्त्र के प्रबंधन में तथा समुदाय संचालन हेतु एक प्रोत्साहन होगा ताकि जंगलों पर चारा व ईंधन की लकड़ी के दोहन हेतु गांव वालों की निर्भरता कम हो।

इस परियोजना में एनटीएफपी और गैर–एनटीएफपी आधारित आजीविका सुधार घटक में, गैर–काष्ठ वन उत्पाद (एनटीएफपी) और गैर–एनटीएफपी आधारित वैकल्पिक आजीविका गतिविधियों दोनों का कार्यन्वयन होगा। आजीविका सुधार के संवर्धन के लिए सामुदायिक विकास गतिविधियां उन गतिविधियों के इर्द–गिर्द केंद्रित होगीं जो वन और पारिस्थितिकी तंत्र पर दबाव कम करेंगे। सामुदायिक विकास और आजीविका की गतिविधियों में कमजोर समूहों को शामिल करने का प्रयास किया जाएगा। एनटीएफपी–आधारित आजीविका गतिविधियों के तहत 'जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ' की स्थापना पी.एम.यू. स्तर पर की गई है जिसका उद्देश्य एनटीएफपी पर औषधीय पौधों सहित गतिविधियों का समन्वय करना है।

जाइका मुख्यालय शिमला तथा वन मंडल व वन परिक्षेत्र मण्डी के परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों के द्वारा परियोजना के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समिति मण्डल के तीन स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के लिए खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजित किया गया। जिसमें की परियोजना के कर्मचारियों ने समूह की महिलाओं को सीरा , बड़ियाँ इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण दिया।

वन विभाग हिमाचल प्रदेश
हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्त पोषित)

रहें स्वावलम्बन की ओर...

समूह द्वारा तैयार उत्पाद

व्यवसायिक योजना प्रारूप
"बड़ी और सिरा निर्माण"
(प्रति समूह)

रिवालविंग फंड आबंटन - ₹ 1,00,000/-

पूंजीगत व्यय	₹ 60,000 (लगभग)
आवर्ती व्यय	₹ 45,000 (लगभग)
कौशल प्रशिक्षण	₹ 35,000 (लगभग)

परियोजना के सौजन्य से समूहों को प्राप्त उपकरण

विक्रय हेतु तैयार बड़ी व सिरा

समूहों के उत्थान हेतु परियोजना के प्रावधान

- नियमित बैठकों, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण द्वारा समूह सदस्यों का क्षमता निर्माण
- समूह द्वारा चयनित आजीविका वर्धन गतिविधि अनुसार 'व्यावसायिक योजना' के निर्माण में सहयोग
- समूह सदस्यों को नि:शुल्क कौशल आधारित प्रशिक्षण
- प्रत्येक ग्रामीण वन विकास समिति के दो समूहों को परियोजना द्वारा प्रति समूह 1 लाख रूपये की राशि रिवॉलविंग फंड के रूप में देने का प्रावधान
- समाज के कमजोर वर्ग के लिए उत्थान हेतु, पूंजी लागत का 75 प्रतिशत परियोजना द्वारा वहन करने का प्रावधान
- समूह द्वारा तैयार उत्पाद की ब्राडिंग एवं मार्केटिंग में परियोजना सहयोग
- व्यावसायिक योजना के आधार पर समूह द्वारा किसी बैंक से ऋण लेने की स्थिति में, ब्याज राशि का 5 प्रतिशत परियोजना द्वारा वहन करने का प्रावधान

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

जाइका वानिकी परियोजना, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-5, हिमाचल प्रदेश

दूरभाष: 0177-2830217, ई0 मेल :- cpdjica2018hpfd@gmail.com Website: https://jicahpforestryproject.com

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने सुकेत वन मंडल के कांगू वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति बस्तोरी व् वेह के स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण दिया। समूह की महिलाओं ने परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों की देख–रेख में सामुदायिक रूप से मशरूम उत्पादन शुरू किया।

ग्राम वन विकास समिति बेह के मुरारी देवी स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से कृषि विज्ञान केंद्र सुन्दरनगर में मशरूम उत्पादन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण लिया। मुरारी देवी के समूह की महिलाओं ने कृषि विशेषज्ञों की देख–रेख में समुदायिक रूप से मशरूम उत्पादन का शुभारम्भ किया।

चील की पत्तियों से विभिन्न उत्पादों को बनाने का कार्य शिमला वन मंडल के अंतर्गत घनाहटी ब्लॉक की महिलाएं कर रही हैं। जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने इस सम्बन्ध में घनाहटी ब्लॉक की महिलाओं के साथ बैठक की। समूह की महिलाओं ने परियोजना के सहयोग से अपनी हस्तकला में प्रशिक्षण के माध्यम से ज्यादा निखार लाने तथा मार्केटिंग की संभावनाओं पर विचार–विमर्श किया।

23 अगस्त, 2021 को दूरदर्शन शिमला पर जाइका वानिकी परियोजना के विषय में आयोजित एक सीधे प्रसारण कार्यक्रम में भाग लेते श्री नागेश कुमार गुलेरिया, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका)।

मुरारी देवी स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को जाइका वानिकी परियोजना की तरफ से मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केन्द्र सुंदरनगर में दिया गया, उसके बाद समूह की महिलाओं ने इसे समूह में उगाना शुरू किया व सफलता हासिल की। इस अवसर पर श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने भाग लिया तथा मशरूम उत्पाद को बेचने की शुरुआत की।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत बलघार में ग्राम सभा आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति बलघार द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया। परियोजना स्टाफ ने स्वयं सहायता समूह के साथ आजीविका बढ़ाने वाली गतिविधियों पर भी चर्चा की।

चौपाल वन मंडल के थरोच वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत खुंड केवल में ग्राम सभा आयोजित की गई। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति इर्रा द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में स्वीकृति दी गई।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लु में जाइका परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति सारी–II के स्वयं सहायता समूह जगन्नाथी की महिलाओं को लघु व्यापार योजना के तहत हथकरघा के सामान जैसे खड्डी, धागा तथा टोपी व जैकेट बनाने के लिए सिलाई मशीन इत्यादि दी गई।

स्वां परियोजना के प्रतिनिधियों ने श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) से मुलाकात की और पूर्व में जाइका स्वां परियोजना के अधीन गठित स्वां महिला महासंघ (पंजीकृत गैर सरकारी संगठन) की क्षमता वर्धन एवं विपणन सम्बन्धी संभावनाओं के विषय में चर्चा की।

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्त पोषित)

समूह सशक्तिकरण को समर्पित जाईका वन परियोजना

एक झलक

व्यवसायिक योजना प्रारूप

"केंचुआं खाद उत्पादन"

(प्रति समूह)

रिवालविंग फंड आबंटन - ₹ 1,00,000/-

पूंजीगत लागत	₹ 1,80,000 (लगभग)
आवर्ती लागत	₹ 1,20,000 (लगभग)
कौशल प्रशिक्षण	₹ 50,000 (लगभग)

जाईका वानिकी परियोजना प्रदेश के छः जिलों की 460 ग्रामीण वन विकास समिति के 920 स्वयं सहायता समूहों को संगठित कर आजिविका वर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत-

- नियमित बैठकों, कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण द्वारा समूह सदस्यों का क्षमता निर्माण।
- प्रत्येक वन विकास समिति के दो समूहों को परियोजना द्वारा प्रति समूह 1 लाख रूपये की राशि रिवोलविंग फंड के रूप में देने का प्रावधान।
- समूह द्वारा चयनित आजिविका वर्धन गतिविधि अनुसार "व्यवसायिक योजना" के निर्माण में परियोजना सहयोग।
- समूह को निःशुल्क कौशल आधारित प्रशिक्षण उपलब्ध करवाना।
- व्यवसायिक योजना के आधार पर परियोजना द्वारा कुल पुंजी लागत का 75 प्रतिशत परियोजना वहन किया जाएगा।
- तैयार उत्पाद के विक्रय हेतु बाजार उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- व्यावसायिक योजना के आधार पर समूह द्वारा किसी बैंक से ऋण लेने की स्थिति में, ब्याज राशि का 5 प्रतिशत परियोजना द्वारा वहन करने का प्रावधान

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

जाइका वानिकी परियोजना, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-5, हिमाचल प्रदेश

दूरभाषः 0177-2830217, ई0 मेल :- cpdjica2018hpfd@gmail.com Website: https://jicahpforestryproject.com

संस्थागत क्षमता को मजबूत बनाना

हि.प्र. वन विभाग हिमाचल प्रदेश में वन संसाधनों की सुरक्षा व प्रबंधन तथा वन क्षेत्र में पारिस्थितिकी तन्त्र के लिए कार्यरत है। वन विभाग, विविध केन्द्रीय प्रायोजित योजनाओं, राज्य योजनाओं का कार्यान्वयन कर रहा है, साथ ही विदेशी सहायता प्राप्त परियोजनाओं जैसे कि जापान सरकार से प्राप्त ऋण से पोषित योजना, स्वां नदी एकीकृत जलागम प्रबन्धन परियोजना" वर्ष 2006 से 2016 तक कार्यान्वयन कर चुका है। वन विभाग को सहभागी वन प्रबंधन के तरीकों से कार्य चलाने में गूढ़ अनुभव प्राप्त है। परियोजना के प्रभावी कार्यान्वयन तथा स्थिरता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सामुदायिक स्तर की सस्थाओं तथा दूसरे भागीदारों/ सहायक संस्थाओं को कार्य कुशल और प्रभावी ढंग से इकट्ठे कार्य करने के लिए यह आवयश्क होगा कि हि. प्र. वन विभाग की संस्थागत क्षमताओं को सुदृढ़ किया जाए।

जाइका वानिकी परियोजना के प्रभावी कार्यान्वयन के उद्देश्य के लिए, एच.पी.एफ.डी, सामुदायिक स्तर के संस्थानों और पी.एम.यू कर्मचारियों की संस्थागत क्षमता को मजबूत करना आवश्यक है। इस घटक के माध्यम से, परियोजना वन प्रबंधन और जैव विविधता संरक्षण दोनों के लिए MIS/GIS के माध्यम से मानव संसाधन क्षमताओं और ज्ञान के आधार पर निर्णय लेने वाली सहायता का प्रभावी उपयोग या निगरानी तंत्र में सुधार का संवर्धन कर रही है।

ठियोग वन मंडल के बलसन वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति काशना के अधीन स्वयं सहायता समुह का गठन किया गया। साथ ही परियोजना के स्टाफ व् परियोजना सलाहकार डॉ इंदु चंद्रा नागर ने समूह के सदस्यों को समूह सम्बधी लेखा–जोखा रखने का प्रशिक्षण दिया।

मंडी और शिमला वन मंडल के बैच–1 के तहत आने वाले ग्राम वन विकास समितियों के अध्यक्ष, सचिव और वार्ड सुविधा प्रदायकों के लिए वन प्रशिक्षण संस्थान और रेंजर्स महाविद्यालय, सुंदरनगर, हिमाचल प्रदेश में एक दिवसीय प्रशिक्षण/दिशानिर्देश (भूमिका और जिम्मेदारी) कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सिराज वन मंडल के बैच–1 के तहत आने वाले ग्राम वन विकास समिति के अध्यक्ष और सचिवों के लिए सामुदायिक प्रशिक्षण और पर्यटन केंद्र साई रोपा में एक दिवसीय प्रशिक्षण/दिशानिर्देश (भूमिका और जिम्मेदारी) कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के अन्तर्गत जापान में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका)।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लू के जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारियों व कर्मचरियों ने ग्राम वन विकास समिति बस्तोरी के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूह नारी शक्ति के सदस्यों के साथ मशरूम खेती की व्यवसायिक योजना के बारे में बैठक हुई।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति माण्डल का दौरा किया। जिसमें "लक्ष्मी और नितिका" स्वयं सहायता समूह के द्वारा तैयार की गई व्यावसायिक योजनाओं को परियोजना कर्मचारियों के सहयोग से अन्तिम रूप दिया गया।

परियोजना प्रबंधन इकाई (पी.एम.यू.) शिमला का आजीविका संवर्धन समूह एवं बिलासपुर वन मंडल के एस.एम.एस., एफ. टी.यू. सेवानिवृत्त रेंज अधिकारी, वन रक्षक के साथ विभिन्न आजीविका गतिविधियों और आय सृजन के बारे में ग्राम वन विकास समिति जय भोले शंकर, ग्राम अमरपुर, बिलासपुर वन मंडल के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ बातचीत की तथा एतद् द्वारा होने वाली आय गतिविधियों को अंतिम रूप दे दिया गया।

परियोजना के कर्मचारियों ने मण्डी वन मंडल के सेरी मंच में स्वयं सहायता समूहों के साथ परियोजना के अंतर्गत किये जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों की चर्चा की।

परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला का आजीविका संवर्धन समूह एवं मंडल प्रबंधन इकाई, बिलासपुर के कर्मचारियों ने संयुक्त रूप से बिलासपुर वन मंडल के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति रोहिन का दौरा किया। जिसमें परियोजना कर्मचारियों ने समिति के सदस्यों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों और आय सृजन के बारे में जानकारी दी तथा एतद द्वारा होने वाली आय गतिविधियों को अंतिम रूप दिया गया।

परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला का आजीविका संवर्धन समूह एवं मंडल प्रबंधन इकाई, बिलासपुर के कर्मचारियों ने संयुक्त रूप से बिलासपुर वन मंडल के आदर्श ग्रामीण वन विकास समिति सदस्यों के साथ बैठक की। इस बैठक में विभिन्न आजीविका गतिविधियों और आय सृजन के बारे में समूह सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा की तथा इसके द्वारा होने वाली आय गतिविधियों को स्वयं सहायता समूहों के किये अंतिम रूप दे दिया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र, सुंदरनगर में मशरूम खेती की तकनीकों पर सुकेत वन मंडल में परियोजना के अंतर्गत गठित साँझा रुचि समूहों के सदस्यों लिए तीन दिवसीय (1 से 3 मार्च, 2021) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के स्टाफ ने रोहडू वन मंडल के सरस्वती नगर वन परिक्षेत्र के छाजपुर ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों के साथ बैठक की तथा आजीविका बढ़ाने वाली गतिविधियों पर चर्चा की।

शिमला वन मंडल के तारादेवी वन परिक्षेत्र में परियोजना के अधीन गठित की गई ग्राम वन विकास समिति रंगोल में स्वयं सहायता समूहों की बैठक हुई, जिसमें आजीविका सुधार के बारे में चर्चा की गई और समूह के अधीन चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया गया।

ठियोग वन मंडल के बलसन वन परिक्षेत्र में परियोजना के अधीन गठित ग्राम वन विकास समिति अपर मुंडू व लोअर मुंडू के सदस्यों को परियोजना के स्टाफ व् परियोजना सलाहकार डॉ इंदु चंद्रा नागर ने समूह के सदस्यों को समूह सम्बधी लेखा–जोखा रखने का प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण शिविर में समूह सदस्यों के अलावा वन विकास समिति के कार्यकारिणी सदस्यों ने भी भाग लिया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने मण्डी वन मंडल के कटौला वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत घरान का दौरा किया तथा धार–1 वार्ड के स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ बैठक की और समूह में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया।

नाचन और जोगिन्दरनगर वन मंडल के बैच–1 और सुकेत वन मंडल के बैच–2 के तहत आने वाले ग्राम वन विकास समितियों के अध्यक्ष, सचिव और वार्ड सुविधा प्रदायकों के लिए वन प्रशिक्षण संस्थान और रेंजर्स महाविद्यालय, सुंदरनगर, हिमाचल प्रदेश में एक दिवसीय प्रशिक्षण/ दिशानिर्देश (भूमिका और जिम्मेदारी) कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सिराज वन मंडल में परियोजना के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूह सदस्यों के लिए सामुदायिक प्रशिक्षण और पर्यटन केंद्र साई रोपा में प्रशिक्षण/ दिशानिर्देश (भूमिका और जिम्मेदारी) कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

वन मंडल मण्डी के कटौला वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों ने व्यावसायिक योजनाओं के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की।

परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति टिकरी के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूह सदस्यों के साथ बैठक की। जिसमें परियोजना स्टाफ ने व्यावसायिक योजनाओं को तैयार करने के संबन्ध में समूह के सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा की।

परियोजना प्रबन्धन इकाई (पी. एम.यू.) शिमला एवं मंडल प्रबंधन इकाई (डी.एम.यू.), कुल्लू के कर्मचारियों द्वारा संयुक्त रूप से पार्वती मंडल के भुंतर वन परिक्षेत्र के तहत आने वाले ग्राम वन विकास समिति (वी.एफ.डी.एस.) जौली का दौरा किया और आजीविका संवर्धन गतिविधियों के संबंध में महिलाओं को जानकारी दी, विशेष रूप से हथकरघा (हैंडलूम)।

कृषि विज्ञान केंद्र, सुंदरनगर में मशरूम खेती की तकनीकों पर सुकेत वन मंडल के स्वयं सहायता समूहों/साँझा रुचि समूहों के लिए तीन दिवसीय कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ।

वन्यप्राणी मण्डल कुल्लू, वन्यजीव परिक्षेत्र मनाली के अंतर्गत गठित जैव विविधता प्रबंधन समिति कराड़सु (काई वन्यजीव अभ्यारण्य) की उप–समिति बीष्ट्भेर में स्वयं सहायता समूह की बैठक आयोजित करके समूह का गठन किया गया।

Sh. Nagesh Kumar Guleria, Chief Project Director (JICA), PIHPFEM&L conducted the video conference with Dr. Ines Freier, Independent (Consultant), Germany and Dr. Rajan Kumar Kotru, LEAD Strategist, Redefined Sustainable Thinking (REST) LLP in which a detailed discussion regarding JICA HP Forestry project was held.

वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लू के अंतर्गत आने वाली ग्राम वन विकास समिति सारी–2 के स्वयं सहायता समूह सदस्यों की जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ बैठक हुई, जिसमें कि समूह के सदस्यों को समूहों में काम किस प्रकार चलेगा आदि रूप से मार्गदर्शन किया। इस बैठक में कुल्लू की जाइका परियोजना निदेशक एवं सहायक अरण्यपाल सहित वन क्षेत्र के अन्य कर्मचारी भी उपस्थित हुए।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) की अध्यक्षता में ACSTI सांगटि में हि.प्र. जाइका वानिकी परियोजना के विभिन्न मण्डलों से आए व् मुख्यालय शिमला के अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें की डॉ. रमेश चंद कंग (निदेशक, जड़ी–बूटी सेल), श्रीमती मीरा शर्मा (जाइका परियोजना निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय कुल्लु), श्री राजेश शर्मा (जाइका परियोजना निदेशक, मुख्यालय शिमला) भी शामिल हुए।

कुल्लु जिले के पहाड़ी कृषि अनुसंधान व प्रसार केंद्र बजौरा में मशरूम की खेती के लिए पांच दिवसीय (2 से 6 मार्च, 2021) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें ग्राम वन विकास समूह बस्तोरी के स्वयं सहायता समूह नारी शक्ति के प्रतिभागीयों ने प्रशिक्षण लिया।

कुल्लू जिले के पहाड़ी कृषि अनुसंधान व प्रसार केंद्र बजौरा में मशरूम की खेती के लिए पांच दिवसीय (2 से 6 मार्च, 2021) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें ग्राम वन विकास समूह बस्तोरी के तहत नारी शक्ति स्वयं सहायता समूह से आए प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसके समापन पर बागवानी विभाग कुल्लू के उप–निदेशक महोदय ने मशरूम उत्पादन में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रतिभागीयों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

वन्य प्राणी मंडल कुल्लू की शिली राज गिरी, नेउल, कराडसु और काईस की जैव विविधता प्रबंधन समिति के अधीन गठित उप समितियों के अध्यक्षों और सचिवों के लिए एक दिवसीय परियोजना के कार्य सम्बन्धी निर्देश प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत बेरी में जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने महिला मंडल बेरी के सदस्यों के साथ बैठक की और उन्हें परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए प्रेरित किया।

जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारियों व् कर्मचारियों ने वन मंडल बिलासपुर के वन परिक्षेत्र झंडूत्ता में परियोजना के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समिति दाहड़ के स्वयं सहायता समूह/साँझा रुचि समूह सदस्यों के साथ समीक्षा बैठक की तथा समूह में चलाई जा रही आजीविका गतिविधियों के बारे में चर्चा की।

बिलासपुर वन मंडल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति संगम के स्वयं सहायता समूह व साँझा रूचि समूह के सदस्यों ने बैठक की। जिसमें परियोजना कर्मचारियों ने भी भाग लिया तथा समूहों में चलाई जा रही आजीविका गतिविधियों पर चर्चा की।

वन मंडल बिलासपुर के घुमारवीं वन परिक्षेत्र में हि. प्र. जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत बैच –1 के स्वयं सहायता समूह तथा ग्राम वन विकास समिति के कार्यकारिणी सदस्यों के लिए ओरिएंटेशन एवं फैसिलिटेशन (अभिविन्यास और सुविधा) प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के सौजन्य से हिमाचल प्रदेश वन प्रशिक्षण संस्थान और रेंजर कॉलेज सुंदरनगर, जिला मंडी में श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) की अध्यक्षता में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें वन विभाग के उच्च अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

जाइका वानिकी परियोजना के स्टाफ ने आनी वन मंडल के निथर वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित नौनी ग्राम वन विकास समिति व् स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ व्यावसायिक योजनाओं के बारे में बैठक की।

आनी वन मंडल के निथर वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति जझार व इसके अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ व्यावसायिक योजनाओं के बारे में बैठक की।

पार्वती वन मंडल के शमशी में परियोजना के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों को दिशा निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजित किया गया।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने परियोजना क्षेत्र के वन मंडल अधिकारियों के साथ परियोजना गतिविधियों से संबंधित समीक्षा बैठक वर्चुअल माध्यम द्वारा की।

मुख्य परियोजना निदेशक
की कलम से . . .

संचार क्रांति के इस युग में सोशल नैटवर्किंग का बहुत महत्व है। हमारा हर संभव प्रयास है कि सोशल नैटवर्किंग का भरपूर लाभ उठाते हुए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित जाइका वानिकी परियोजना गतिविधियों सम्बन्धी सूचनाओं का त्वरित आदान–प्रदान हो ताकि बेहतर तालमेल द्वारा अच्छी सेवाएं प्रदान करने में सहायता मिल सके। इसी दिशा में माननीय मुख्य मंत्री, हि.प्र., श्री जयराम ठाकुर जी द्वारा माननीय वन मंत्री जी की उपस्थिति में जाइका परियोजना की वैबसाइट का शुभारम्भ किया गया था।

परियोजना का अधिकतर कार्यक्षेत्र ग्रामीण है और सभी स्थानों, विषेशकर ग्राम स्तर तक परियोजना गतिविधियों की दिन–प्रतिदिन की जानकारी निरंतर सोशल मीडिया के माध्यम से साझा की जा रही हैं। जाइका वानिकी परियोजना से सम्बन्धित 7 वन वृतों, 18 वन मण्डलों के 61 वनपरिक्षेत्रों से जाइका गतिविधियों की ढेर–सारी सूचनाएं हमें प्रतिदिन प्राप्त होती हैं लेकिन उनमें से कुछ चुनिन्दा मुख्य गतिविधियों को ही हम सोशल मीडिया पर साझा कर पाते हैं। परन्तु, इसका मतलब अन्य सूचनाओं को हरगिज निम्नतर आंकना नहीं है। वे सभी सूचनाएं जो सोशल मीडिया के लिए चुनी जाती हैं, या जो रह जाती हैं, वे सभी हमारी सूचना बैंक का महत्वपूर्ण हिस्सा बन रही हैं। इन गतिविधियों की जानकारी मुख्यालय से सोशल मीडिया के माध्यम से भी प्रतिदिन शेयर की जाती हैं।

उपरोक्त में से कुछ चुनिंदा गतिविधियां इस प्रकाशन में संकलित कर प्रकाशित की जा रही है। मैं क्षमा चाहुँगा कि सभी को इस प्रथम अंक में सम्मिलित नहीं किया जा सका है लेकिन, भविष्य में उन्हें भी इसमें सम्मिलित करने का प्रयास किया जाएगा। यह एक निरंतर प्रक्रिया है और प्रत्येक वर्ष इसका प्रकाशन होना है।

इस प्रकाशन के माध्यम से जहां एक ओर, अलग–अलग क्षेत्रों में किए जा रहे जाइका वानिकी परियोजना के प्रयासों को सतत् रूप में आप तक पहुँचाने का प्रयास है वहीं दूसरी ओर, परियोजना से जुड़े हुए अधिकारी, कर्मचारी और हमारी ग्राम वन विकास समितियाँ तथा स्वयं सहायता समूह भी बेहतर परिणाम प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित होंगे।

मैं, सभी क्षेत्रीय कर्मचारियों का इस प्रकाशन के लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूँ और भविष्य में भी उनके सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

धन्यवाद।

नागेश कुमार गुलेरिया,
भा.व.से.
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका)

मीडिया में परियोजना गतिविधियां...

सार-संक्षेप

बड़ियां बनाकर आत्मनिर्भर बनेंगी महिलाएं

4 सदस्यीय जड़ी-बूटी सैल गठित, क्लस्टर बना कर लोगों को जड़ी-बूटियां उगाने में करेगा मदद

देश के लोगों को समर्थन मूल्य के अलावा कॉस्ट डिफरेंस का भी मिलेगा लाभ

प्रदेश के विश्वविद्यालयों की भी ली जा रही है मदद

'कठोगण' गांव में मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण देने के लिए जायका टीम का जताया आभार

जायका परियोजना से चिलगोजा सीबकथॉर्न को मिलेगी नई पहचान

प्रदेश में जायका परियोजना पर खर्च होंगे 800 करोड़ रुपये : डॉ. ओमपाल

और 20 फीसदी हिमाचल ... करेगा। इस परियोजना का लक्ष्य जल जंगल जमीन का ... जैव विविधता, आजीविका में ... लाना और संस्थागत क्षमता सुदृढ़ करना है। इस दौरान ग्राम ... विकास समिति का गठन ... गया। प्रदीप लेटका को प्रधान, ... थानटा को उपप्रधान, नरेश ... को सचिव और चंद्रदीप लेटका ... संयुक्त सचिव चुना गया।

एलोविरा की खेती कर बढ़ाएं आय : गुलेरिया

शिमला। हिमाचल के 376 गांवों में जापान की मदद से चलाई जा रही जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेटिव (जाइका) परियोजना चरणबद्ध तरीके से कार्य कर रही है। इस परियोजना के तहत बुधवार को टुटू ब्लॉक के पनेश गांव में मुख्य परियोजना अधिकारी नागेश गुलेरिया ने गांव में चलाए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने पौधरोपण, खेतों की बाड़बंदी, नालियों की खुदाई, लैंटाना उन्मूलन का निरीक्षण किया। गुलेरिया ने लोगों को एलोविरा की खेती करने की सलाह दी। इसको लेकर मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने अपने बजट अभिभाषण में भी उल्लेख किया है। कार्यक्रम में कृषि विकास अधिकारी (मशोबरा) खेमराज शर्मा ने केंचुआ खाद के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। ग्राम वन विकास समिति के अध्यक्ष रणजीत ... सचिव एवं गलोट पंचायत के उपप्रधान राजेंद्र ठाकुर, सदस्य अजय ... कमलेश ठाकुर, अमरचंद, जगदीश, निशा, मंजू, पिंकू भी मौजूद रहे।

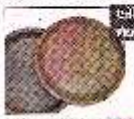

पनेश गांव में जाइका परियोजना ...

पौधरोपण व ... सुधार पर खर्च ...

दिव्य हिमाचल ब्यूरो - शिमला

वन मंत्री गोविंद सिंह ठाकुर ने गुरुवार को 800 करोड़ रुपए की जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जायका) परियोजना की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस परियोजना के कार्यान्वयन का यह पहला वर्ष है और इस दौरान पौधरोपण और ग्रामीण आजीविका सुधार आदि कार्यों पर 41.78 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि परियोजना के अंतर्गत इस वर्ष 854 हेक्टेयर वन ... चुका है। गोविंद ... कि प्रत्येक वार्ड के लि... एक सूक्ष्म योजना तैयार ... और 30 जून तक ... योजनाएं तैयार कर दी ... 2020-21 में 150 सूक्ष्म ... तैयार कर कार्य शुरू कि... उन्होंने कहा कि प्रत्येक ... युवाओं को रोजगार प्र... जाएगा। उन्होंने कहा ... परियोजना के माध्यम ... पौधों के साथ-साथ कि... में नेवजा तथा स्पिति में ... का पौधरोपण किया ज...

प्रदेश में रोपे जाएंगे 12 लाख पौधे

800 करोड़ रुपये ... राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जायका) परियोजना के तहत इस साल 854 हेक्टेयर वन भूमि पर 12 लाख पौधे ... जानकारी वन मंत्री ... शिमला में आयोजित ... दी। उन्होंने कहा ... कार्यान्वयन का ... और इस दौरान ... ग्रामीण आजीविका ... पर 41.78 करोड़ ... जाएंगे। परियोजना ... ग्राम वन विकास ... में से किए जाएंगे ... 61 वन विकास ... किया जा चुका है। ... लिए विशेषज्ञ एक ... कर रहे हैं और ... सूक्ष्म योजनाएं ... गयी। 2020-21

भटवाड़ में ज़ायका प्रोजैक्ट के माध्यम से रोपी जाएगी हरियाली

प्रोजैक्ट के समन्वयक सहित पारा संस्था के प्रतिनिधियों ने लोगों को बांटी जानकारी

मंडी, 23 फरवरी (खेमचंद शास्त्री): विकास खंड द्रंग के तहत ... ग्राम वन विकास समिति ...

... मिति बनेहड़ की बैठक के बाद ... लोग।

बैठक में ग्राम वन विकास समिति बनेहड़ के प्रधान प्यार चंद सकलानी, वन खंड अधिकारी हेम, वनरक्षक विवाग, समिति की सचिव भगवती देवी सहित आदि ग्रामीण मौजूद थे।

हिमाचल-दिल्ली के होटलों में पत्तलों पर परोसेंगे खाना

पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए स्वयं सहायता समूहों के तहत महिलाओं के लिए लगेंगी मशीनें

खास खबर

जायका से किन्नौर के चिलगोजा व स्पीति के सीबकथॉर्न को मिलेगी नई पहचान

औषधीय पौधों को बढ़ावा देने के लिए गठित की जाएगी हिम जड़ी-बूटी समिति

शिमला, 26 जुलाई (ब्यूरो): राज्य में हरित आवरण बढ़ाने के साथ लोगों को आजीविका उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से हिमाचल वन पारितंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना शुरू की गई है जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। जायका एजैंसी द्वारा वित्त पोषित इस परियोजना पर वन विभाग द्वारा 800 करोड़ रुपए व्यय किए जा रहे हैं। 10 वर्षीय इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य प्रदेश में वन वृद्धि, जैव विविधता संरक्षण व संस्थागत क्षमता के सुदृढ़ीकरण के साथ ग्रामीण लोगों की आर्थिकी में सुधार करना है। इस परियोजना के लिए वर्ष 2020-21 के लिए 41.78 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं। प्रदेश की जैव विविधता की गणना के लिए सैटेलाइट और ड्रोन की मदद से सर्वेक्षण करवाए जा रहे हैं। परियोजना प्रदेश के 6 जिलों किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू और लाहौल-स्पीति के 18 वन मंडलों के 16 वन परिक्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। परियोजना में स्थानीय लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 81 ग्रामीण वन समितियां गठित की गई हैं। इस परियोजना के अंतर्गत जनजातीय क्षेत्र किन्नौर के चिलगोजा और स्पीति के सीबकथॉर्न प्रजाति जैसे औषधीय पौधों को बढ़ावा दिया जाएगा। इन प्रजातियों के 35,000 पौधे रोपित करने के लिए संबंधित वन मंडल अधिकारियों को लगभग 10 लाख रुपए की राशि उपलब्ध करवाई जाएगी।

परियोजना में शामिल जिलों के प्रत्येक वार्ड के लिए एक सूक्ष्म योजना बनाई गई है और इस वर्ष 40 सूक्ष्म योजनाएं कार्यान्वित की जाएंगी। वर्ष 2020-21 के लिए 150 सूक्ष्म योजनाएं बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इन योजनाओं के अंतर्गत प्रत्येक वार्ड में 10 युवाओं को रोजगार प्रदान किया जाएगा।

माननीय मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जी के कर कमलों द्वारा जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत निर्मित अत्याधुनिक वन पौधशाला कंमाद (जिला मण्डी) का शुभारम्भ किया तथा परियोजना की विकासात्मक गतिविधियों बारे पोस्टर जारी किए।